DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION INITIATIVE

DADHEECH
INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION

Imprint

DITF BULLETIN

OUR MOTTO
Sharing is Caring

वर्ष-1 , अंक -10 , अक्टूबर-2021

Get The Latest Scoop
ON THIS MONTH'S TRENDS

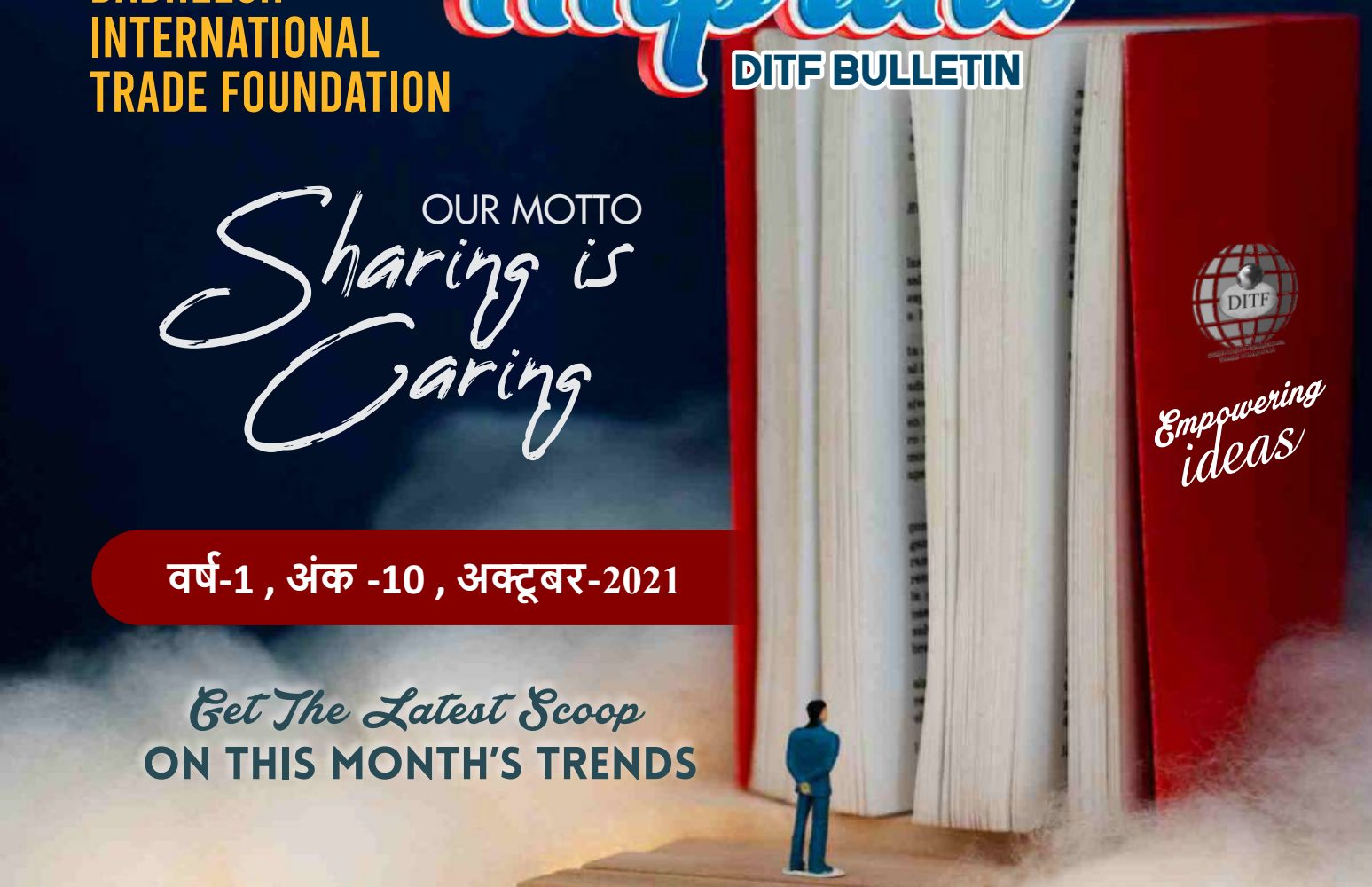

Amalgamation of Learning

kaleidoscope of thoughts and vision

OCTOBER EDITION

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION INITIATIVE

मुख्य संपादक
डॉ. तरूणा दाधीच

फाउंडर प्रेसिडेंट
देवेश दाधीच

प्रकाशक
शोभा दाधीच

E-mail- dadheech@ditfindia.org

सम्पादकीय आलेख

'अहिंसा- अच्छाई का समन्वय'

अक्टूबर प्रारंभ होने से पहले ही गांधी - शास्त्री जयंती की तैयारी शुरू हो जाती है और हो भी क्या ना। गांधी - शास्त्री एक महान युग निर्माता थे। प्रसिद्ध कवि सोहन लाल द्विवेदी के शब्दों में

युग-परिवर्तक, युग-संस्थापक, युग-संचालक, हे युगाधार!
युग-निर्माता, युग-मूर्ति! तुम्हें युग-युग तक युग का नमस्कार!
तुम युग-युग की रूढ़ियाँ तोड़ रचते रहते नित नई सृष्टि,
उठती नवजीवन की नींवें ले नवचेतन की दिव्य-दृष्टि।

अहिंसा को प्रमुख जीवन दर्शन बनाकर राष्ट्र में नई संचेतना को जागृत किया है, आपने । सत्य और अहिंसा के उनके सिद्धांत हमें ईमानदारी के साथ जीवन जीने के बारे में बहुत कुछ सिखाते हैं। लाल बहादुर शास्त्री ने एक प्रधानमंत्री के साथ ही स्वाधीनता सेनानी के रूप में भी देश की सेवा की। हर भारतीय के हृदय में उनके लिए सम्मान है । देश के किसान और सैनिकों के प्रति उनका सम्मान उनके 'जय जवान, जय किसान' के नारे में झलकता है ।कवियित्री इंदु पाराशर की कुछ पंक्तियाँ मुझे स्मरण हो आई है-

विश्वास ,धर्मनिष्ठ, कर्मठ
निज देश प्रेम से ओतप्रोत
सामर्थ्य हिमालय से ऊंचा
मन में जलती थी, ज्ञानजोत।

धन्य है.... भारत मां के सपूत । राजा राम भी मातृभूमि से प्रेम की भावना परिलक्षित करते हैं और कहते हैं जननी "जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। स्वर्ण नगरी के राजा रावण का वध कर श्री राम ने बुराई पर अच्छाई और पाप पर पुण्य को । विजयादशमी इसी कारण से हम बनाते हैं। यह दस दिन लंबा उत्सव है। नौ दिन देवी दुर्गा की पूजा के बाद आता है । यह एक ऐसा पर्व है जो लोगों के मन में नई ऊर्जा, नई चाह और सात्विक ऊर्जा लाता है।
अहिंसा - अच्छाई का समन्वय और पालन व्यक्ति विशेष के लिए नहीं वरन समस्त मानव जाति के लिए है, और तभी हमारा कल्याण संभव है।

शुभम् भवतु।।
संपादक की कलम से.....

डॉ.तरुणा दाधीच
मुख्य संपादक

शारीरिक वेगों का ज्ञान

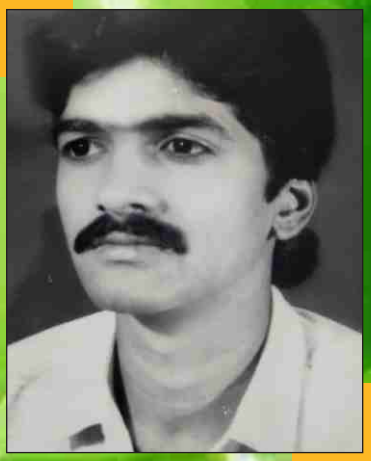

- वैद्य महेश आचार्य
आयुर्वेदाचार्य ,
राजसमंद

मानव शरीर की संरचना में ईश्वर प्रदत्त ऐसी सुंदरतम व्यवस्थाएं हैं कि नियम से चलने पर शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति सम्यक रहते हुए सारे अंगों को, सारे तत्वों को सुचारू रूप से चलाती है। रोग होने पर यही शक्ति पर इस रोग से लड़ती है तथा स्वस्थ करने का सतत प्रयास करती है तथा चोट लगने, घाव होने या रक्त आने पर शरीर में स्वयं का सिस्टम है जो रक्त प्रवाह को रोकता है। लूज़ मोशन होने पर भोजन को विश्राम देकर छाछ, पानी का सेवन ही कंट्रोल कर देता है, परंतु इंसान हर काम को शीघ्र करना चाहता है। मानव प्रकृतिवश सुख- शांति की चाह में शीघ्रता करता है ।ऐसे ही हर रोग (कष्ट) का निवारण प्रकृति स्वयं करने की चेष्टा करती है । अजीर्ण में लंघन हितावह होता है, मानसिक थकान में निद्रा सम उपचार नहीं होता । शरीर में कुछ वेग उत्पन्न होते हैं जिनका शारीरिक प्रक्रियाओं से संबंध होता है। फलस्वरूप कुछ वेग शरीर में उत्पन्न होते हैं ये वेग शारीरिक प्रक्रियाओं से संबंध होता है शरीर में उत्पन्न होते यह एक शारीरिक प्रक्रियाओं के ही द्योतक है । शरीर में उत्पन्न वेगों का विभाजन दो प्रकार से किया जाता है-

1-अधारणीय वेग- आयुर्वेद शास्त्रों में प्रथम अधारणीय वेगों का वर्णन कर सावधान किया गया है क्योंकि आधारणीय वेगों को हठ या अज्ञान वश धारण करते रहने से रोग की संप्रत्ति होती है ।

अधारणीय वेग-

वेगान्न धारयेद्वात विण्मूत्रक्षवतृट्क्षुधाम ।

निद्रा, कास, श्रम, श्वास, जृम्भा, अश्रु च छर्दिरितसाम।।

वात से अभिप्राय अपान वायु , पुरीष (मल), मूत्र, प्यास, आंसु , भूख , उबासी, शुक्र इन वेगों को नहीं रोकना चाहिए । इनमें से होने वाले रोग एवं लक्षण का विशद वर्णन है। बच्चों एवं किशोर वय को इनका ज्ञान नितांत आवश्यक है। जैसे एक -दो दिन कम खाने से दुबला नहीं होता या दो दिन घरिष्ठ भोजन खाने से मोटा नहीं होता वैसे ही एक- दो बार परिस्थितिवश वेगों को रोक लेने से रोग नहीं होता है, परन्तु आदत में डालने से विकृति अवश्य निर्धारित हो जाती है। प्रत्येक अंग की अपनी क्रियाएं है जो इससे प्रभावित होती है ।

2- धारणीय वेग- तीन प्रकार के वेग को धारण करना चाहिए अर्थात रोकना चाहिए।

1- बुरे मानसिक वेग- यथा लोभ, क्रोध ,शोक ,अहंकार,निर्लज्जता,ईर्ष्या,अभिद्या (दूसरों का धन लेने की इच्छा) आदि मानस वेगों को रोकना (धारण करना) चाहिए।

2- बुरे वाचिक (वचन) वेग- कठोर वचन, चुगलखोरी, झूठ बोलना और अकाल वचन इनको भी रोकना चाहिए।

3-अशस्त शारीरिक वेग- दूसरों को पीड़ा देने वाले कर्म, परस्त्री चोरी, हिंसा, कारक वेगों को रोकना(धारण) करना चाहिए। यह वेग धारण करने का मनोबल व विवेक होना चाहिए । जिससे स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन के साथ जीवन का उच्चकोटि का निर्माण हो पाए। मैंने आमजन जो कि इन बातों की जानकारी रखते ही होंगे, मैंने आयुर्वेद चिकित्सक होने के कारण ध्यानाकर्षण किया है । अभी होता यूं है कि सामान्य पेट दर्द, वायु के कारण जिसका निदान सोनोग्राफी से भी नहीं हो पाया। रोगी से पूछने पर ज्ञात होता है कि मामूली गैस बनती है परंतु के गैस, वात नहीं होती तो सीधा अर्थ कब्ज वो भी सामान्य कब्ज। ऐसे में वेग (अपान वायु) का धारण रोकना भी कारण बनता है। प्रबुद्ध जन इस को नेट (गूगल) पर भी देख सकते हैं।

पानी (जल) की संक्षिप्त जानकारी-

1. प्रातः का उषापान - आंख खुलते ही बिस्तर पर ही बैठ कर दोनों हाथों से आँखों को सहलाते हुए दोनों हाथों को आपस में रब करते हुए दर्शन करें। अपने इष्ट का स्मरण करते हुए बिस्तर का त्याग करना चाहिए। तत्पश्चात पानी के लिए हाथ (अंजलि) में पानी को लेकर चुल्लू से पानी मुंह द्वारा खींचकर पानी मुंह द्वारा खिंच कर पानी मुँह में ही भरा रखें। दूसरा पानी लेकर खुली आँखों पर दो-तीन बार छींटे । तत्पश्चात मुंह का पानी थुंके। इसके बाद नीचे बैठकर पानी पिए। पानी की मात्रा 1 लीटर तक बढ़ाएं ।

2- भोजन के साथ अल्प मात्रा में पानी का प्रयोग करें। एक दो घूंट पानी से टेस्ट पुनः नया हो जाता है। पर ज्यादा नहीं पियें । भोजन के बाद व पहले पानी इसलिए मना किया जाता है कि भोजन को पचाने वाले तरल पाचक रस (एंजाइम्स) पानी से पतली हो जाने से पाचन में इनकी क्रियाशीलता कम हो जाती है। अतः भोजन के 1 घंटे बाद ही पानी पीने की आदत डालें और भोजन का पाचन सही नहीं होने से कब्ज गैस सिरदर्द की के कारण बनते हैं और शरीर का पूरा पोषण नहीं मिलेगा।

THE FUTURE OF SMALL BUSINESSES WITH THE RISE OF ECOMMERCE

-Aishwarya khator (CA Final Student)

The topic under discussion is of great economical significance of the country as well as its people. The small businesses are the engine and backbone of the economy. Both in the rural and urban areas, small businesses have set their roots and are growing with each passing day. And, no one can deny the fact that behind every small business is a family, the family that earns its livelihood solely from such small business. With passage of time, the process of doing business has changed and the modern day society is more inclined towards the use of technology and bringing out the best from it.

As per the MSME Ministry Data, currently there are 6.3 crore MSMEs in India and contributes around 6.11% of the manufacturing GDP along with 24.63% of GDP from service sector. As per the available data, MSMEs have generated an employment of over 3.87 crore. The small businesses were growing rapidly in India and were aiding to the economy as well until the covid outbreak hit the economy adversely. The small work and decrease in revenue put these businesses in a tough position. Unaware about the end of lockdown in 2020, many small businesses were shut permanently while few were temporarily closed. It was a year of difficult times but as they say, after every gloomy day there is sunrise. And E-Commerce emerged as an angel to many small businesses. While people were grounded in their houses due to curfew in the cities, the E-Commerce was the sole source of survival to many out there. Within no time, these small businesses started supplying their products through the online stores earnings a good margin and surviving the difficult times. As per a report, the revenue of retail industry increased in Q3 and Q4 of 2020 due to E-Commerce. 27% of the Indian MSMEs which are online today use E-Commerce. And this has resulted in decrease in marketing and distribution cost. Not only it has reduced the cost but has also made the small businesses realize the importance of keeping up with the technology and taught them how dynamic a business environment could be over time. E- Commerce isn't the cherry on the cake but is a new cake. By adopting E-Commerce, SMEs shall achieve significant advantages such as increased revenues and margins,

	Growth rate of employment	Growth rate of number of enterprises
Manufacturing	18%	23%
Services	34%	31%

access to new market and customer acquisition. SMEs using E-Commerce record 60-80 percent reduction in marketing and distribution cost.

There are two sides to every coin and thus is the section of small businesses that had adverse impact due to rise of E-Commerce. This is basically the section that is not inclined towards the technology and still believes in the traditional business approach. People who could not register themselves as suppliers on E- Commerce due to lack of knowledge or those who are deprived of internet access or those who don't know how to use the same are the ones who are adversely effected due to the E-Commerce. Their turnover has drastically decreased as customers are gradually learning to appreciate and use the E-Commerce for ordering stuffs required because they have more options and after sale service.

The questions that arise in mind are how will the future of MSMEs look like? Will they be selling products through E-Commerce or not? If yes, how will it work for long run and if no, why? If the small businesses continue selling their products through E-Commerce, they must focus on after sale service and product quality because the option of return and exchange has made customers more aware about the substitutes available. Not only after sale service but the small businesses need to focus on the opportunities available around them and be prepared for the changes in political and technological business environment of business as a small change in government policy for the E-Commerce can be both beneficial and adverse for the business. In the past, Government initiatives like Digital India, Make in India, Start-up India, Skill India, Innovation Fund, and more have contributed to the digital advancement and e-commerce growth in the nation. And, it is believed that more such initiatives will be taken in future which would turn out to be favorable for the small businesses in rural as well as urban India.

As mentioned earlier, there are two sides to the coin. Besides all the benefits that small business has due to the E- Commerce, there are certain risks too associated with the same. The risk of security i.e. hacking, online frauds etc can't be overlooked and hence one should possess complete knowledge of the same before proceeding. Here, the little knowledge can be dangerous. There are days when the sites crash and the same can hamper the sale. Therefore, it is advised to choose the appropriate platform to sell the products. Legal issues including change in tax laws and government policies too can be a point to be considered important for the success and failure of a business.

Now, talking about how we as customers can help these businesses boost. The answer is so simple; we can buy products from them and appreciate their work by giving a review for the same because the more we appreciate their skills, the more competent they will be. MSMEs are the future of the country. "**It might be considered as small investment enterprise but their contribution to the economy has always been noteworthy" – Roma Priya (Founder, Burgeon Law)**

The increase in use of internet and dependency on the technology has turned out to be a game changer for the business. With access to internet, MSMEs have started to trade globally now. As per a survey, around 56 percent of MSMEs believes that use of internet is vital for business growth. MSMEs who adopt the E-Commerce for business activity report 51% higher revenue which results in 49% more profits and 7% broad customer support. And now that the government and the stakeholders have identified the potential of the MSMEs and E-commerce, the future of this industry seems bright in India. E-Commerce has truly been an angel for the small businesses and its growth.

चाहत भी हैं मेरी, और धिक्कार भी करते हो,
दूर्गा पूजन के समय पर , अपने सिर पर धरते हो ,
रंग बदलू गिरगिटों की तरह,
श्री राम की सिया कहलाईं गई
मैं बोलूँ सिर्फ इज्जत और मान रखना दोस्त,
मेरी कोख सेही जीवन की शुरुआत भई,
दोनो जब होंगे साथ, मिलाकर हाथ तभी तो जीव रहेगा
शिवपार्वती संभाले अपनी डगरसमझ ले तो ही संसार टिकेगा !

-सायली दायमा की कलम से।।

Riddle No. 1 Answer :- Piano

गांधी एक सच्चाई

-डॉ. हरिओम पँवार
द्वारा लिखित कविता

संकलनकर्ता - रिया जोशी।
कक्षा -11 भीलवाड़ा

गाँधी सच्चाई, अहिंसा का संविधान है
आचरण की पूरी पाठशाला का विधान है।

गाँधी जी तो भारत की आत्मा का नाम है,
जिसकी ज़िन्दगी पवित्रता का तीर्थधाम है ।

गांधी पुण्य संगम है जग की सभ्यताओं का,
गाँधी शिलालेख है पवित्र मान्यताओं का ।

गाँधी तो विशेष है, परम विशेषताओं में ,
जो सदा जियेगा मेरे देश की हवाओं में ।

गाँधी एक भावना है, आस्था के प्यार की ,
एक मनोकामना है परिधियों के पार की।

गाँधी एक कसौटी है कुर्सियों के त्याग की,
अनूठी अंगूठी है आजादी के सुहाग की।

गाँधी चेतना है, शोध है,
इस धरा के आदमी में देवता का बोध है।

गाँधी चंदनी तिलक है , हिंद के ललाट का
उसके लिए मोल क्या है किसी राजघाट का।

गाँधी तो रहेगा याद युगों, यादगारों में,
हम ही नहीं मिलेंगे कहीं समाचारों में।।

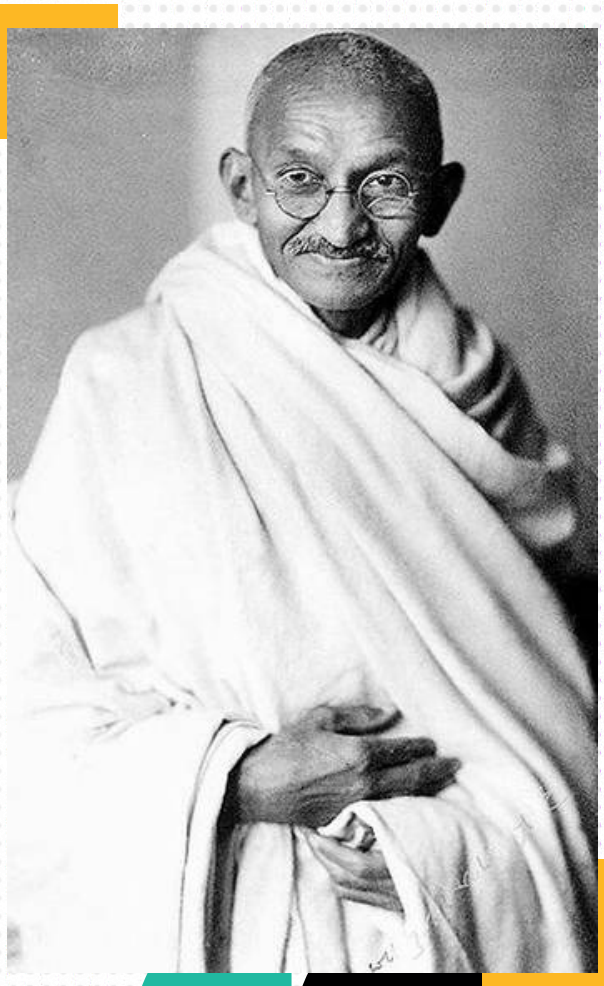

How to Start-up!!

- CS Trishla Bisawa

A budding Company Secretary working with a corporate advisory firm with experience in corporate secretarial compliances of listed and unlisted entities.

We often talk amongst our family and friends about business ideas and how if it gets implemented it can bring a big change. I can bet that at some point or the other in our life we have ended up having this discussion but only a few of us had/ will have the courage of taking the next step and implement the idea which we were discussing about.

Quite often we read about the stories of people who implement their ideas at a small pace and then slowly and gradually that business becomes a giant product/ service provider in the market and we cannot imagine our lives without that product/ service being a part of it. There are many examples like Flipkart, Ola, Zomato, Paytm, etc. these were nowhere in the market if we look a decade back but now, they occupy the markets such that the consumers cannot think of life without their services.

Maybe you might have had the same idea which they started with and which helped them grow but what you missed is taking the risk to implement your idea and make it a reality. One common reason which I feel abstains people from giving a shape to their idea and bringing the same into reality is either lack of funds or fear of losing their hard-earned investments into a failed business.

Taking the second one first, if you want to gain something you must always be ready to take the risk associated with its failure. Had the founders of the companies stated above not taken the risk, they wouldn't have been working as giants in the market today. For the first obstacle, i.e., the lack of funds, there is always an option to borrow (through fundings) which I will discuss in more detail in the upcoming para of our discussion but first, lets clear the difference between entrepreneurship and a startup.

While entrepreneurship refers to all new businesses, including self-employment & businesses that never intend to become registered, startups refer to new businesses that intend to grow large beyond the solo founder. Also, startups typically begin by a founder (solo-founder) or co-founders who have a way to solve a problem. When you are bringing up a startup it mostly means you have found a lag in the market and now you have developed a product/service to fill that lag. Now-a-days there are many institutions and universities that provide training on startups however, “The best way of learning about anything is by doing” ~ Richard Branson.

Startups have several options for funding. Revenue-based financing lenders can help startup companies by providing growth capital in exchange for a percentage of monthly revenue.

Venture capital firms and angel investors may help startup companies begin operations, exchanging seed money for an equity stake in the firm. One can also seek loans or monetary gifts from friends and family and combine it with savings and credit card debt to initially finance the venture. Other funding opportunities include various forms of crowdfunding, for example equity crowdfunding, in which the startup seeks funding from a large number of individuals, typically by pitching their idea on the Internet. There are a lot of Government funding schemes like SAMRIDH Scheme, Startup India Seed Fund, Startup India Initiative, ASPIRE, Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, ATAL Innovation Mission, Credit Guarantee Fund Trust for Micro and Small Entreprises (CGTMSE), NewGen Innovation and Entrepreneurship Development Centre (NewGen IEDC), Stand Up India Scheme, etc. which can be a source for getting the capital required for your venture.

You can also receive funding via more involved stakeholders, such as startup studios. Startup studios not only provide funding to support the business through a successful launch, but they also provide extensive operational support, such as HR, finance and accounting, marketing, and product development, to increase the probability of success and propel growth.

The government is not only promoting these schemes to help the present group of startups benefit from them but also motivate the budding entrepreneurs, startups, and students form all domain, who tends to be independent and lead the vision of Atmanirbhar Bharat forward. One only needs to research and find what will be the best option for their venture and take the initiative to start. So, from next time, don't just discuss about your million-dollar ideas within your group; research, plan, develop and shoot! You never know your product/servi product/service could be that basic need whose absence from the markets is something which the then consumers would not be able to imagine.

'दुर्गापूजा'

आसुरी शक्तियों पर विजय पाने के लिए की जाती हैं

अनुपमा शर्मा (दाधीच)
वरिष्ठ पत्रकार व कार्यकारी संपादक जिनागम,
मेरा राजस्थान, मैं भारत हूँ पत्रिका,
व समाजसेवी मुबंई

आसोज सुदी एकम से आसोज सुदी नवमी तक देवी की पूजा नौ दिन तक की जाती है, इसीलिये उसे 'नवरात्र' या 'महापूजा' कहा जाता है। इसमें पूजा करना मुख्य कार्य है जबकि उपवास, एकासना (एक वक्त भोजन) नव व्रत आदि तो पूजा के अंग मात्र हैं, इसमें अपने-अपने कुल के आधार पर ही नवरात्रि के नियमों की अनुपालना करनी चाहिये, किसी के घर में पूजा-पाठ नहीं हो सकती तो कहीं और पूजा-पाठ करना अनिवार्य होता है, कुछ लोग तो केवल व्रत ही करते हैं जबकि वे पूजा-पाठ और हवन नहीं करवाते, वे अपने-अपने कुल-धर्म के अनुसार इस व्रतोत्सव का अनुष्ठान कर सकते हैं।

सामान्यत: नवरात्रि का शुभारम्भ 'एकम' तिथि से होता है किन्तु जब कभी एकम टूट जाती है अथवा कभी तिथि बढ़ जाती है तब क्या करना चाहिए, इसकी जानकारी करनी भी आवश्यक है? नियम तो यह है कि प्रतिपदा के दिन तिथि ६ घड़ी, ४ घड़ी, २ घड़ी रहे तो उसे ही प्रतिपदा मान ली जाती है। अमावस्या के दिन यदि प्रतिपदा आ जाये तो भी अमावस्यायुक्त प्रतिपदा का यह अनुष्ठान नहीं करना, यदि प्रतिपदा के दिन तिथि दो घड़ी से कम हो बिल्कुल नहीं हो, तभी उसे अमावस मान लिया जाता है। देवीपुराण की कथा से युक्त प्रतिपदा को चंडिका का पूजन न करें। 'प्रतिपदसत्वे अमायुक्ताऽपिग्राहया' अर्थात् यदि एकम क्षय हो और प्रतिपदा न हो तो अमावस्या में भी स्थापना की जा सकती है।

नवरात्र के प्रारम्भ का उल्लेख शास्त्रग्रंथों में भी हुआ है जिसे 'आद्यपादौ परित्यज्य, प्रारभेत, नवरात्रकम्' पंक्ति से प्रमाणित किया जा सकता है, इसका यह अभिप्राय है कि पहले १० घड़ी छोड़कर यह व्रत आरम्भ किया जाये, यदि चित्रा वैधृत योग हो तो उसके अन्त में आरम्भ करें यदि उस दिन चित्रा-वैधृत पूरे हो तो तिथि के चौथे हिस्से से पूजा करनी चाहिए, इस पूजा के अधिकारी सभी वर्ग के लोग समान रुप से माने गये हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, मलेच्छ यहाँ किसी भी श्रेणी का व्यक्ति इसका अधिकारी हो सकता है, पूजा-पाठ करने का अधिकार तो सब को प्राप्त है किन्तु शुद्र और म्लेच्छ लोगों को होम करने का अधिकार नहीं है।

प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नव पाठ अवश्य करने चाहिए, यदि कार्य में बाधा हो तो तृतीया से नवमी तक ७ पाठ अथवा पंचमी से नवमी तक ५ पाठ अथवा सप्तमी से नवमी पर्यन्त तीन पाठ अथवा अष्टमी को एक पाठ या नवमी को एक पाठ करें। नवरात्र में चाहे एक ही पाठ क्यों न हो, वह अवश्य करना ही चाहिये, उसमें अखण्ड दीपक रखें या पाठान्त ही उसे प्रज्जवलित करें, यह साधक की इच्छा और क्षमता पर निर्भर है।

विधि-विधान : प्रात:काल, दोपहरी या तीसरे प्रहर के बाद कलश-स्थापन करें प्रात:जल्दी उठें। उबटन (मालिश) कर आंवला से स्नान करें, फिर पवित्र वस्त्र पहन कर संकल्प करें- 'मैं देवी की प्रीति पाने के लिये, सारी विपत्तियों का निवारण करने के लिये, धनपुत्रादि की वृद्धि के लिये, जय तथा कीर्ति की

उपलब्धि के लिए प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नवरात्र पूजा, गणपति पूजा, स्वस्तिवाचन के द्वारा चण्डी की आराधना करुँगा' फिर लाल कपड़ा बिछावें और उस पर अष्टदल बनाकर कलश स्थापन करें। तदुपरांत गणपति पूजन तथा स्वस्तिवाचन का कर्मानुष्ठान किया जाये।

कलश-स्थापना के समय, 'महिद्यो' मंत्र बोलते हुए जमीन पर हाथ रखें। 'औषधय:' मंत्र से जव डालें, उसमें गंगाजल मिलावें और गन्ध द्वारा उसकी सुगन्ध बढ़ावें या 'औषधीय:' मंत्र से कूट, छाल, छबील, हल्दी, वच, चमेली, नागरमोथा तथा दगड़फूल भी डालें। 'कण्डात्' मंत्र से दूब डालें। 'अश्वत्थेयौ' मंत्र से पीपल, बड़, गूलर, आम कणेर के पत्ते मिलावें। 'स्योनाप्र' मंत्र से उसमें गजशाला, घुड़साल, राजद्वार, रथशाला, चौराहा, गौशाला तथा तालाब की मिट्टी डालें। ''याफलिनी'' मंत्र से सुपारी, 'साहित्यानि' मंत्र से पंचरत्न (सोना, चांदी, पन्ना, नीलम, हीरा) डालें। 'युवा सुवासा:' मंत्र से लाल वस्त्र लपेटें। 'पूर्णादर्वि' मंत्र से पूर्णपात्र तथा वरुण देव का आवाहन करें।

जवारा लगाना : पवित्र मृत्तिका (मिट्टी) का पात्र, तालाब की मिट्टी, गौबर, जव और पूजा की सामग्री तैयार कर जवारे लगाना चाहिए, मिट्टी के पात्र में मिट्टी साफ करके 'महिधौ' मंत्र से मिट्टी डालकर 'गावश्चिद्' मंत्र से उसमें गोबर डालना, 'औषधय' मंत्र से जव मिलाना और 'वरुणो' मंत्र से जल सींचना चाहिए, फिर 'वाटिकास्वरुपायै नम:' मंत्र से आवाहन-ध्यान पूजन करें, फिर नमस्कार करके पाठ में बैठने वाले ब्राह्मण को 'नमोस्वनन्ताय' मंत्र द्वारा तिलक-पुष्प-अक्षत-चढ़ावें। 'व्रतेन दीक्षा' मंत्र से वरणी बाँधे, सुपारी और दक्षिणा देवें और फिर पाठ करें।

पाठ के प्रकार : ब्राह्मण का वरण करने के बाद आसन पर बैठकर यह संकल्प करें-

यजमानेन वृताऽहं चण्डीपाठं, नारायणहृदयं, लक्ष्मीहृदयं पाठं वा करिष्ये।' तत्पश्चात सप्तशती का पाठ करना चाहिये अन्यथा 'नारायण हृदय' तथा लक्ष्मी हृदय का भी पाठ कर सकते हैं। पाटे पर पुस्तक रखें। नारायण को नमस्कार करें।

नारायणं नमस्कृत्यं नरंचैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासें ततो जयमुदीरयेत्।।

हिन्दी अनुवाद - नारायण को नमस्कार करने के पश्चात् नरों और नरों में श्रेष्ठ भगवान श्री कृष्ण, देवी महर्षि व्यास को प्रणाम कर 'जय महाकाव्य' का पाठ करना चाहिए, फिर नियमानुसार अथवा शाक्त पुस्तक पूजा करें। 'ॐ ऐं, हीं क्रीं चामुण्डायै विच्चै नम:' इस मंत्र के द्वारा गन्धपुष्पादि चढ़ावें और फिर पाठ करें।

पाठ के नियम - प्रत्येक मंत्र के आदि और अंत में (ॐ) का उच्चारण अवश्य करें और हाथ में पुस्तक नहीं पकड़ें, लिखित पुस्तक ब्राह्मण के द्वारा लिखी गई ही काम में लेवें। अध्याय की समाप्ति पर ही रुकें, बीच में नहीं रुकें। अगर विराम हो जाये तो अध्याय वापिस पढ़ें। ग्रन्थ के अर्थ को समझाते हुए, साफ-साफ उच्चारण करें तथा न तो जोर से और न धीरे से पढ़ें। उपसर्ग की शांति के लिए ३ पाठ करें। ग्रहपीड़ा या बड़ा भय उपस्थित होने पर ७ पाठ करें। राजा को वश में करने के लिए १ पाठ करें। वैरनाश के लिए १२ पाठ करें। स्त्री या पुरुष को वश में करने के लिए १४ पाठ करें। सुख और लक्ष्मी के लिए १५ पाठ करें। पुत्र-पौत्र और धन्यधान्य की वृद्धि के लिए १६ पाठ करें, वन सम्बन्धी भय में २० पाठ करें, बन्धनमुक्ति के लिए अर्थात् कैद से छूटने के लिए २५ पाठ करें। असाध्य रोग में १०० पाठ करें, ''वाराही तंत्र'' के अनुसार १०० पाठ हर दु:साध्य कार्य के लिए करने चाहिए, अगर इसके साथ वेद-पारायण भी करें तो मनोकामना पूरी हो सकती है। अगर प्रतिदिन का बलिदान हो तो उसे पाठ के अन्त में करना चाहिए, ज्यादा आपद् हो तो एक दिन एक पाठ तथा दूसरे दिन दो पाठ करें, इसी तरह नवमी को नव पाठ करना शास्त्रसम्मत माना जाता है।

कुमारी पूजन - कुमारी पूजन में एक वर्ष की कन्या न लेकर दो वर्ष से लेकर १० वर्ष तक की कन्या लेनी चाहिए, दो वर्ष की कन्या को 'कुमारिका' कहते हैं, तीन वर्ष की-त्रिमूर्ति', ४ वर्ष की 'कल्याणी', ५ वर्ष की 'रोहिणी', ६ वर्ष की 'काली', ७ वर्ष की 'चण्डिका', ८ वर्ष की 'शांभवी', ९ वर्ष की 'दुर्गा' एवं १० वर्ष की भद्रा या सुभद्रा कहलाती है या तो इस तरह प्रतिदिन उसकी पूजा करें अथवा पहले दिन एक कन्या, दूसरे दिन २ व तीसरे दिन ३ कन्या, इस तरह ९वें दिन ९ कन्याएँ पूजी जाती है, यदि सभी कन्याओं का प्रबन्ध न हो तो एक ही कन्या की प्रतिदिन पूजा करें, यदि एक ही कन्या की पूजा करनी हो तो इस मंत्र से करें-

मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं, मातृणां रुपधारिणीम्
नव दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्

हिन्दी अनुवाद- मैं उस कन्या का आवाहन कर रहा हूँ जो मंत्रों के अक्षरों में साक्षात् लक्ष्मी के समान विराजमान तथा देवी माता का स्वरुप धारण करने वाली हैं वही कन्या साक्षात् नवदुर्गा को आत्मा के रुप में प्रतिष्ठित मानी गई है।

छोड़ो ख़ैर....

-पीयूष दाधीच

एकाउंट्स मैनेजर, केजीके डायमंड्स(I) प्रा.लि.

पिछले 2 वर्षों में महामारी के चलते सभी को अपने प्रियजनों से जुड़े रहने में और मिलने में समस्या का सामना करना पड़ा। उसी समय के दौरान इस विषत्र को सन्दर्भित कर मैंने कुछ पंक्तियां लिखी है जो प्रस्तुत है-

चन्द सालों से ये जो जुड़े रहने की कोशिश है,
यूँ लगता है जैसे, मुझको मुझमें मिटाने की साज़िश है।

कभी - कभी अपने रोज़मर्रा के जीवन से व्यथित होकर जब कोई उदास हो जाता है किन्तु रुकने को और घड़ी भर विश्राम करने को तैयार नहीं होता, तब वह अवश्य ही इन पंक्तियों में लिखित विचारों से जुड़ा महसूस कर सकता है।

लाश होकर, लाश लेकर, लाश की तरह चल रहा हूँ;
इसमें भी कभी जान आएगी, इसी ख़याल में चल रहा हूँ।

और इसी महामारी में जो परिवार और मित्रों से दूर होके एकाकी जीवन व्यतीत करके अब परेशान हो चुके हैं उन सभी के लिए लिखा था।

के अकेले रहकर इतना अकेला हो गया हूँ,
अब अकेलेपन का साथ भी, ना-गवारा लगता है।

और जैसे के अब सब सामान्य हो रहा है और लोग अपने घरों से बाहर निकल कर फिर से सामान्य जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं, किन्तु वह भयावह स्थिति और उसकी यादें भुलाए नहीं भूलती।

क़िताब के कुछ पन्ने फाड़ देने से,
उनकी लिखावट मिट तो नहीं जाती।

और जो लोग अब भी एकाकी जीवन जीने को मजबूर हैं और अपने प्रियजनों से दूर हैं, जब उन्हे कोई कुशल क्षेम पूछे तो दिमाग में अनायास ही ये भाव अवश्य आते होंगे।

एक और दिन गुज़रा,तेरे बगैर।
कैसा दिन गुज़रा? छोड़ो ख़ैर।

और यह कुछ पंक्तियाँ बस यूं ही अकेलेपन पर लिखी है
जो किक आज के मनुष्य के जीवन की कठिनाइयों से जुड़ी हैं।

वक्त नूर को बेनूर बना देता है, छोटे से ज़ख्म को नासूर बना देता है;
कौन चाहता है अपनों से दूर रहना? वक्त सबको मज़बूर बना देता है।

किन्तु इन मजबूरियों के पीछे भी मनुष्य स्वयं ही ज़िम्मेदार होता है और वह अपनी महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सदैव अपने भीतर की आवाज़ को कुछ इस प्रकार दबा देता है।

दिल करता है के खुल के रोऊँ,
दिल के सारे दर्द ख़ाली करदूँ।
पर दिल की बाक़ी तम्मनाओं के जैसे,
क्यूँ ना इसका भी गला घोंट दूँ ?

Riddle No. 2 Answer :- Bank

Wow...Cow!!

A beautiful cow with its affectionate kidkeep positivity in any house and its opencell.Wonderfully hygienic changes bringamong the people by listening its sweetringing bell.Energetic and positive atmospherespreads the healthy aroma at theshelter's palace.Its milk brings healthy matabolismsystem and increase resistance powerto keep us fresh.Wonderfully throw enthusiasm inaccompany of the pious animal which iscalled the mother of whole cosmos.Because it's milk keep us healthyunconditionally and make active withoutlose.Hayllove this divine creature protect theanimal and serve its with dedication.Lovely smile and vigorous life alwaysrun in our family with cominggenerations.By Mr.U.

Umesh Sharma,
Educationist,DAVRuparish Kunj Ajmer(Rajasthan)

तीतली

-स्नेहप्रभा शर्मा

(स्नेहप्रभा शर्मा, आप मैजिक जैक , अमरीका में रहती हैं और हिंदी कविता-लेखन में आपकी विशेष रुचि है।)

तितली आई रंग बिरंगी तितली आई। रंगे फूलों पर छाई ॥
पंख फैलाये बगियन में आये। फूल पराग उड़ा ले जाए ॥
बालक पीछे दौड़े, पकड़ न पाये।
खिल- खिल फूल से फूल पर मँडराये ॥
फूल पांखी पर पानी, ओस बूँद चाँदी सी चमकी

मैं कौन हूँ..... - मंजू शर्मा

एक रोज सागर किनारे
खड़ी मैं सोच रही मैं कौन हूँ..
मैं तिनकाहूँ या पर्व हूँ ,
मैं अथाह हूँ यदि सरहद हूँ..
मैं ईश्वर हूँ मज़हब हूँ,मैं कौन हूँ।

एक रोज सागर किनारे...
मैं राह हूँ या मंजिल
मैं सत्य हूँ या स्वपनहूँ,
मैं विवेक हूँ याभावना हूँ।
मैं कौन हूँ...
मैं ही हूँ मां, ईश्वर भी
मैं....

मंजिल हूँ और ठोकर भी मैं,
दिनकर की ज्वाला मुझे में
सागर की गहराई मुझमें है।
शिव की शक्ति मुझ में है, कृष्ण की भक्ति मुझमें है।
एक रोज सागर...

मुझसे ही संसार बना,सब रिश्ते नाते मुझे सेहै।
कमजोर नासमझ मुझे ये इकबाल मैंने ही लाए है।
मैं अहिल्या हूँ , मैं मन्दोदरी हूँ
मैं सावित्री हूँ, मैं ही सीता हूँ।
एक रोज सागर...
मैंने ही चांद पर पांव रखा, मैंने ही मंगल गीत गाए हैं।
एक रोज सागर किनारे....
छोटी सी जिंदगी मेरी अणु सी छोटी हूँ।
लेकिन धीरज की प्रतिमूर्ति हूँ ओरप्रलय कीक्षमता हूँ
न मानो तो कुछ नहीं
मानो तो जीवन दायिनी हूँ।
एक रोज़ सागर किनारे खड़ी
मैं सोच रही मैं कौन हूँ...

संध्याकाल

-प्रियंका शर्मा

एम ए (इकॉनॉमिक्स), एमबीए(एचआर)

वर्तमान में लेखन कार्य

सूरज ढलने पर है आसमान नीला कम बादलों से घिरा हुआ काला सूरज की हल्की सी लाली से लाल हुआ नजर आ रहा है। चाय का एक कप एक हाथ में लिए मैं सोच से गिर गई संध्या कितना खूबसूरत सा एहसास है। पक्षियों का घर पर जाना, पति का घर पर आना साथ में बैठना बातें करना और तो और बच्चों का खेलने भाग जाना मौसम का एक अलग-सा रूप महसूस होता है।

संध्या किसी के लिए बड़ी बोझिल सी हो जाती है और किसी के लिए इतनी सुहानी कि उसके मन तरंग सब झूम उठते हैं।

आज पीहू भी कुछ ऐसा ही सोच रही थी। सोच रही थी क्या किया जाए पेंटिंग, सिंगिंग या कहीं घूम आऊं। पर इतने में ही पीछेसे आवाज आई बहू मौसम बड़ा अच्छा है कुछ पकोड़ियां ही निकाल दो। मैंने कुछ दो-तीन दोस्तों को बुलाया है. मुस्कुराती हुई अपने मन का छोड़ सबके मन का करने लगी। रात को लेटे-लेटे पीहू को याद आया क्या यह वही पीहू है जो सिर्फ अपने मनका करती थी, जब मन किया पेंटिंग करने बैठ जाती थी, जब मन किया घूमने चली जाती थी पर अब तो उसे याद ही नहींअंतिम बार उसने कब अपने मन की सुनी हो सब की खुशी सब के बारे में सोचते-सोचते वह अपने बारे में तो सोचना भूल हीगई थी।

अगली सुबह जब आंख खुली तो पति देव चाय का कप लिए उसके सामने खड़े थे और बोले क्या यार अब तुम पहले जैसी नहीं रही कहां चली गई वो मौज मस्ती कहां चली गई मेरी चंचल सी पीहू अचानक से 5 साल बाद आपको ऐसा क्यों लग रहा है? अब तो मानो जैसे आदत सी हो गई थी उसकी सबसे पहले उठकर सभी के लिए चाय बनाना, सबको नाश्ता देने के बाद खुद नाश्ता करने बैठना, आज क्या बात है आज अचानक क्या हुआ, कुछ हुआ है क्या? तुम ऐसा क्यों सोच रही हो, तुम्हारे मिजाज कुछ बदले से जो है। आज मन किया कि अपनी पुरानी पिहू से मिलूं। मुझे उठने में जरा सी देर क्या हो गई, आपने मुझे सरप्राइज कर दिया।

अरे! नहीं पीहू मैं सोच रहा था। जिस पीहू से मैंने प्यार किया वह तो कहीं खोई सी जा रही है, तो सोचा आज अपनी पीहू से मिलूं सोच रहा था कि क्यों ना आज तुम अपनी पसंद की जगह घूम आओ और सिर्फ पीहू पीहू पीहू के साथ अपनी जिंदगी, अपनी मर्जी, अपने मन का करो पर हां संध्या तक घर आ जाना।

संध्या की चाय तुम्हारे साथ पीने का अलग ही मजा है। पीहू मैं इंतजार करूंगा संध्या की चाय पर। कल की संध्या का यह सुनहरा सच आज के सवेरे देखने को मिलेगा यह सोचा न था।

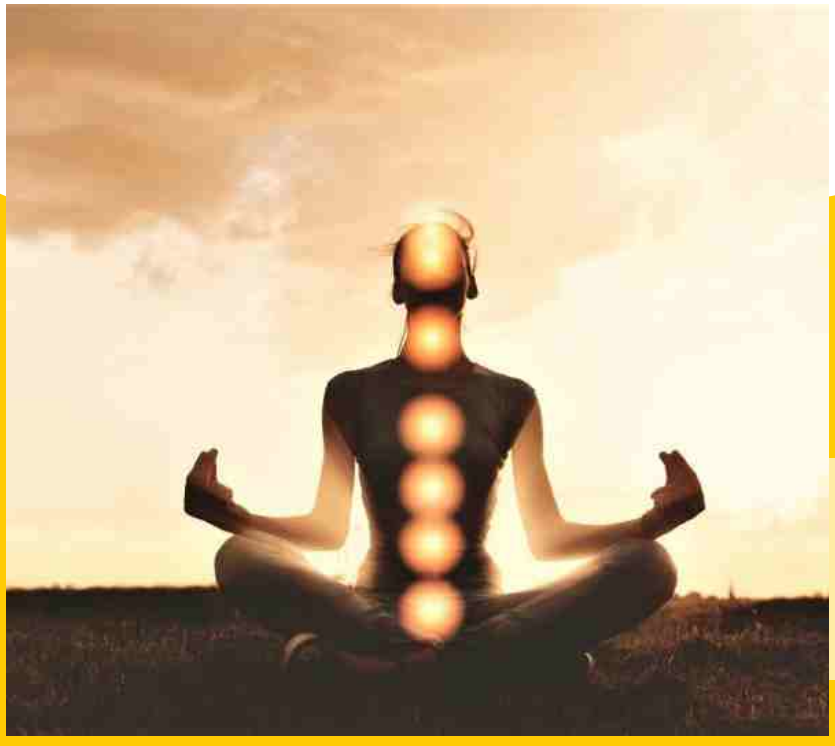

Jaiprakash Sharma
Jodhpur Rajasthan

Take care of your image more than your age because the age of the image is greater than your age Take care of your image more than your age because the age of the image is greater than your age Man is less sick from the things he eats more he gets sick of those things who eats it inside Take care of your image more than your age because the age of the image is greater than your age Remember, even the bee that makes sweet honey does not miss to sting without reason when the occasion arises. So be careful because even a person who speaks too sweet can not only give you honey but also harm. Take care of your image more than your age because the age of the image is greater than your age

Lets try to fumble your brain with some tricky Riddles .

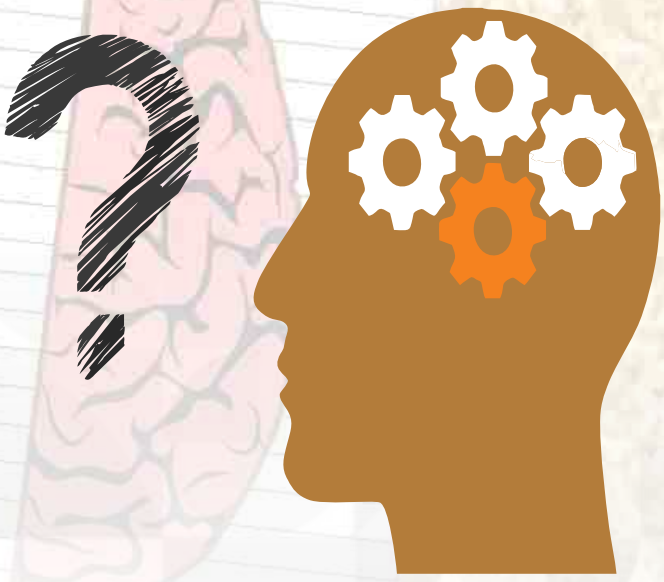

Riddle No 1 :

What has many keys but cant open a single lock?

Ans - _____

Riddle No 2 :-

I have branches ,but no fruit, Trunk or leaves . What am I

Ans-_____

Brain Riddles

Search answer in this bulletin

सम्मानीय बन्धुओं से आग्रह है बुलेटिन के लिए अधिक से अधिक रचनाएँ प्रेषित करें।

यह पत्रिका निःशुल्क है, परिजनों को भी भेजें और नए पहलुओं से परिचय करवाएं।

E-mail- dadheech@ditfindia.org

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION

DITF BULLETIN

OCTOBER EDITION

YASHRAJ CREATIONS, 98294 46940